शब्दार्थ –

अरि-मस्तक – शत्रु का माथा

नद -नदी

विकराल – भीषण, भयंकर

बज्र-मय – पत्थर-सा कठोर, उग्र

घहर – गरज, गंभीर आवाज

निषंग – तरकश, तूणीर

हय – घोड़ा

टाप – घोड़े के पैरों का निचला हिस्सा

खन गया – घायल हो गया

वैरी – शत्रु

दंग – हैरान

व्याख्या – *प्रस्तुत काव्यांश में कवि ने राणा प्रताप के घोड़े चेतक की वीरता का गुणगान करते हुए बताया है कि राणा प्रताप के घोड़े चेतक की एक महत्पूर्ण विशेषता यह थी कि वह युद्धभूमि में एक जगह नहीं टिकता था। कभी वह युद्धभूमि में एक क्षण एक जगह दिखता तो दूसरे क्षण वहाँ नहीं मिलता। वह जहाँ दिखता था दूसरे ही क्षण वह वहाँ नहीं होता। युद्ध-भूमि में ऐसी कोई जगह नहीं होती थी जहाँ वह नहीं होता अर्थात् वह युद्धभूमि में बिना डरे सभी जगह पहुँच जाता था। ऐसा प्रतीत होता था जैसे युद्धक्षेत्र में वह प्रत्येक शत्रु के मस्तक पर विराजमान हो। जब वह दौड़ता था तब वह तेज बढ़ती नदी के समान लहराता हुआ प्रतीत होता था। युद्धभूमि में कभी कभी दौड़ते-दौड़ते वह कहीं-कहीं ठहर भी जाता था। फिर वह शत्रु-सेना पर भयानक बादल बनकर बज्र के सामान टूट पड़ता था अर्थात वह तो शत्रु सेना पर बादल की तरह छा जाता था। शत्रुओं के भाले और तरकश युद्धभूमि में गिर गए और घोड़े के पैरों की टापों से उनका सारा शरीर घायल हो गया। घोड़े के ऐसे रंग-ढंग देखकर शत्रुओं का दल भी हैरान रह गया।*